Foreign Policy Of India: In Perspective of Mordern Times

भारत की विदेश नीति: वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे

Dr. Jitendra Prakash Tyagi
डा0 जे0 पी0 तयागी
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
पी0 एन0 जी0 पी0 जी0
कालेज (रामनगर) नैनीताल

Abstract

भारत की विदेश नीति का मुख्य आधार राष्ट्र हित की रक्षा करना और विश्व में शांति और सहयोग स्थापित करने में सहायक होना है। भारतीय विदेश नीति के लक्षण में जो रंगभेद या जातिवाद के विरुद्ध नीति अपनाई गई है वह भारत के राजनीतिक हितों की रक्षा करने में सक्षम है। मोदी सरकार ने विदेश नीति में उपनिवेशवादी और शीतयुद्ध वाली मानसिकता को हटाकर, विश्व के एक बड़े भाग से संपर्क साधने वाली नीति का परिचय दिया है।

विदेश नीति में आए परिवर्तन का सबसे अच्छा उदाहरण पाकिस्तान के प्रति अपनाए गए दृढ़ रवैये के रूप में देखा जा सकता है। चूंकि, भारत एक लोकतांत्रिक देश है, तो इस के विकास के रास्तों में उतार चढ़ाव भी आएंगे। ये उठा-पटक दूसरे लोकतांत्रिक देशों से कुछ ख़ास अलग नहीं होंगे। ये ठीक वैसे ही होंगे, जैसे हालात इस समय अमेरिका, ब्रिटेन, जापान और जर्मनी जैसे देशों में हैं।

Keywords: विदेश नीति, रंगभेद,जातिवाद,लोकतांत्रिक।

भारत को 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त हुई और तभी से स्वतंत्र भारत को विश्व के अन्य राष्ट्रों के साथ संबंध बनाने के लिए एक स्वतंत्र विदेश नीति की भी आवश्यकता हुई ।आज इस वैज्ञानिक युग में कोई भी राज्य बिना विश्व राज्यों के समुदाय से अलग-थलग रहकर अपने सर्वांगीण विकास को प्राप्त नहीं कर सकता है। गृह नीति के द्वारा राष्ट्र में शांति व कानून व्यवस्था बनाने के साथ ही आधुनिक राज्य को बाध्य राज्यों के साथ संबंध बनाने के लिए एक ऐसी नीति की आवश्यकता पड़ती है जो कि उसके राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा करती है और साथ ही साथ विश्व राज्यों की व्यवस्था में अपना उचित उत्तरदायित्व निभाती है ।प्राचीन समय से ही भारत के अपने पड़ोसी राज्य तथा विश्व के अन्य राज्यों के साथ व्यापारिक संस्कृति तथा मानवीय संबंध रहे हैं। स्वतंत्र भारत की विदेश नीति के निर्माता पंडित जवाहरलाल नेहरू को ही माना जाता है।उन्होंने हमारे राष्ट्र को एक गौरवशाली परंपरा दी । भारत ने गुटनिरपेक्षता, शांति प्रियता, सहयोग एवं विश्व बंधुत्व को आदर्श मानकर अपनी विदेश नीति का निर्माण करने की योजना प्रस्तुत कर दी थी।

भारत की विदेश नीति के दो प्रमुख आधार हैं -पहला और मुख्य आधार है राष्ट्रीय हित की सुरक्षा करना और दूसरा आधार है विश्व में शांति और सहयोग का निर्माण करने में सहायक होना।

भारत की सुरक्षा भारत का सबसे पहला और महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हित है।भारतीय विदेश नीति के लक्षण में जो रंगभेद या जातिवाद के विरुद्ध नीति अपनाई गई है वह भारत के राजनीतिक हितों की रक्षा करने में सक्षम है। इससे भारत को अफ्रीका एवं स्वयं एशिया मे महत्व प्राप्त होता है। भारतीय विदेश नीति में शांति व शांति के समर्थक राष्ट्रों के साथ हर संभव सहयोग करने का निर्णय लिया गया है।भारत चाहता है कि विश्व में शांति रहे ताकि हमारे व्यापार और उद्योगों का विकास हो युद्ध तो विभीषिका लाते हैं, खर्चीले होते हैं ,और विध्वंस करते हैं। अतः इनका त्याग करके शांति के मार्ग पर चलना जरूरी है। भारतीय विदेश नीति में भारत के राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा तभी संभव हो सकती है जब विश्व के राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों का विकास हो तथा शांति की स्थापना के लिए सह अस्तित्व बहुत आवश्यक है।
पहले की हमारी विदेश नीति या दूसरे शब्दों में कहें तो नेहरूवादी आम सहमति की गुटनिरपेक्ष नीति में एकाएक परिवर्तन कर दिया गया है। पूर्व की हमारी संकुचित और आत्म-सीमित नीति, जो विश्व को एक जाल की तरह देखती थी; अब उसे अवसर के रूप में देखने लगी है। रामचन्द्र गुहा की पुस्तक 'इंडिया आफ्टर गांधी' से पता चलता है कि नेहरूवादी विदेश नीति उस समय भी विवादास्पद रही थी। परन्तु इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्रित्व काल में यह नेहरुवादी ढर्रे पर ही चलती रही। वर्तमान में भारत, न केवल विश्व के घटनाक्रम में बढ़-चढ़कर भागीदार बना हुआ है, बल्कि विश्व की दिशा-परिवर्तन का भी एक हिस्सा बनने के प्रयत्न में है।

मोदी सरकार ने विदेश नीति में उपनिवेशवादी और शीतयुद्ध वाली मानसिकता को हटाकर, विश्व के एक बड़े भाग से संपर्क साधने वाली नीति का परिचय दिया है।

विदेश नीति में आए परिवर्तन का सबसे अच्छा उदाहरण पाकिस्तान के प्रति अपनाए गए दृढ़ रवैये के रूप में देखा जा सकता है। भारत ने जिस प्रकार वैश्विक मंच पर पाकिस्तान को अलग-थलग खड़ा कर दिया है; उससे पड़ोसी देश पर हर प्रकार के दबाव पड़ने शुरू हो सके हैं। पूर्व में, पाकिस्तान अपने पैंतरेबाजी से भारत को हैरान-परेशान करता चला आ रहा था।
बांग्लादेश के साथ भूमि और जल सीमा-विवादों का निपटारा करके संबंधों को सौहार्दपूर्ण बना लेना एक बड़ी उपलब्धि रही है। ये ऐसे विवाद थे, जिन्हें चीन 'इतिहास से चली आ रही समस्या' की श्रेणी में रखता था।

चीन और अमेरिका के व्यापार-युद्ध में भारत ने गुट-निरपेक्षता वाली नीति को नहीं अपनाया है। चीन से उसका सीमा-विवाद खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा है, या चीन इसे जानबूझकर समाप्त नहीं करना चाहता है। कई अवसरों पर चीन ने अपना झुकाव पाकिस्तान की ओर दिखाते हुए, अंतराष्ट्रीय मंचों पर भारत के लिए अवरोध उत्पन्न किए हैं। उसने परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह में भारत की सदस्यता का विरोध किया है। व्यापारिक परिदृश्य में भी चीन ने भारत की वस्तुओं और सेवाओं पर रोक लगाकर भारत के व्यापारिक घाटे को बढ़ाया है।

मोदी सरकार ने चीन के बेल्ट रोड प्रस्ताव को नामंजूर करके, उसकी भारत-विरोधी नीतियों का जवाब देने का प्रयत्न किया है। भारत के इस कदम का विश्व के कई देशों ने स्वागत किया है। इसी प्रकार डोकलाम सीमा-विवाद में भारत ने 73 दिनों के गतिरोध का दृढ़ता से सामना किया। चीन की दादागिरी के सामने घुटने नहीं टेके।

नेपाल के मामले में भारत को नाकामी का सामना करना पड़ा है, परन्तु उससे भी संबंध सुधार की ही ओर हैं।

विदेश नीति का आधार आर्थिक भूमि होती है। अगर भारत इस मामले में पुनरुत्थानशील रहा होता, तो विदेश नीति का आधा काम तो अपने आप ही सम्पन्न हो चुका होता। परन्तु दुखःद पक्ष यह है कि वर्तमान सरकार की आर्थिक नीति का ढांचा मजबूत नहीं है। अतः विदेश नीति को लेकर उत्साह नहीं दिखाया जा सकता।

अमेरिका ने नौ करोड़ डॉलर मूल्य के सैन्य उपकरण खरीदने एवं सी-130 जे सुपर हरक्यूलिस विमान के बेड़े के पक्ष में सेवाएं प्रदान करने के भारत के अनुरोध को मंजूरी दे दी है। रक्षा विभाग की डिफेंस सिक्योरिटी को-ऑपरेशन एजेंसी (डीएससीए) ने कहा कि यह प्रस्तावित बिक्री अमेरिका-भारत रणनीतिक संबंधों को मजबूत करने में मदद करके अमेरिका की विदेश नीति एवं राष्ट्रीय सुरक्षा में सहयोग करेगी तथा 'बड़े रक्षा साझेदार' की सुरक्षा सुधारेगी।

पाकिस्तान (Pakistan)के साथ भारत (India)सामान्य पड़ोसी के संबंध चाहता है लेकिन इस्लामाबाद को आतंकवाद (terrorism) के खिलाफ विश्वसनीय कार्रवाई करके इसके लिए उपयुक्त माहौल तैयार करना चाहिए।
2020 के दशक में भारत, अमेरिका और चीन के बाद दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है। 10 फ़ीसद सालाना की धीमी विकास दर से प्रगति के बावजूद, भारत अगले पांच सालों में जर्मनी को और सात वर्षों बाद जापान को अर्थव्यवस्था के मामले में पीछे छोड़ देगा। इस दशक के अंत तक भारत की अर्थव्यवस्था के 7 ख़रब डॉलर की होने की संभावना है। अगर भारत की विकास दर 8 प्रतिशत सालाना रहती है, तो भी भारत इस दशक के आख़िर तक दुनिया की तीसरे नंबर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा।
भारत के लिए सब से अहम अंतरराष्ट्रीय संबंध अमेरिका से रिश्ते हैं। जो कि बेहद व्यापक भी हैं और जिन में काफ़ी गहराई भी है। अमेरिका से हमारा कारोबारी रिश्ता भी है, तो सुरक्षा और रक्षा मामलों में भी हम सहयोगी हैं। हालांकि, अमेरिका हमारे लिए हमेशा भरोसेमंद साथी साबित नहीं हुआ है। लेकिन, आने वाले वक़्त में भारत और अमेरिका के संबंधों की अहमियत बनी रहेगी। फिर चाहे ये एशिया में चीन की दादागीरी की चुनौती देने के लिए हो या व्यापार के बाज़ार को लेकर हो, ये संबंध दोनों ही साझीदारों के लिए अहम हैं। भारत और अमेरिका के संबंध हमेशा सौहार्दपूर्ण होंगे, ये भी ज़रूरी नहीं है। अमेरिका चाहेगा कि भारत अपने बाज़ार का उदारीकरण करे। भारत, अमेरिका से मांग करेगा कि वो अपने देश में भारतीयों के काम करने के और मौक़े मुहैया कराए। अमेरिका चाहेगा कि उस के बोइंग विमान भारत की उड़ान भरें। वहीं, भारत एयरबस के ज़रिए इसमें संतुलन स्थापित करना चाहेगा। भारत और अमेरिका के रिश्ते मज़बूत करने में सब से महत्वपूर्ण भूमिका कारोबार में आपसी सहयोग की होगी। साथ ही भारत और अमेरिकी नागरिकों के संपर्क का भी इसमें अहम रोल होगा। भारत की सरकार को इनको पालना-पोसना चाहिए।
चूंकि, भारत एक लोकतांत्रिक देश है, तो इस के विकास के रास्तों में उतार चढ़ाव भी आएंगे। ये उठा-पटक दूसरे लोकतांत्रिक देशों से कुछ ख़ास अलग नहीं होंगे। ये ठीक वैसे ही होंगे, जैसे हालात इस समय अमेरिका, ब्रिटेन, जापान और जर्मनी जैसे देशों में हैं।

भारतीय विदेश नीति, अर्थव्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय संबंध, कूटनीतिक, सकल घरेलू उत्पाद, सामरिक अध्ययन वो मुद्रा है जिससे किसी देश के अंतरराष्ट्रीय संबंधों को ताक़त मिलती है। भारत को तमाम देशों के साथ अपने संबंधों के कारणों को नए सिरे से परिभाषित करने की ज़रूरत है।अगर वैश्विक प्रभुत्व के लिए जीडीपी का अहम रोल है, तो भारत को चाहिए कि वो अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए पूरी क्षमता से इसके लिए काम करे, और अगर दुनिया के तमाम देशों की ये ख़्वाहिश है कि भारत अपने बाज़ार दुनिया के लिए खोले।

2020 के दशक में भारत, अमेरिका और चीन के बाद दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है। 10 फ़ीसद सालाना की धीमी विकास दर से प्रगति के बावजूद, भारत अगले पांच सालों में जर्मनी को और सात वर्षों बाद जापान को अर्थव्यवस्था के मामले में पीछे छोड़ देगा। इस दशक के अंत तक भारत की अर्थव्यवस्था के 7 ख़रब डॉलर की होने की संभावना है।अगर भारत की विकास दर 8 प्रतिशत सालाना रहती है, तो भी भारत इस दशक के आख़िर तक दुनिया की तीसरे नंबर की अर्थव्यवस्था बन जाएगी।

जब भारत ने अपने संविधान में जम्मू-कश्मीर के लिए विशेष प्रावधान वाले अनुच्छेद 370 को ख़त्म किया, तो, संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में इसकी आलोचना करने वाला एकमात्र देश चीन था। इसका नतीजा ये हुआ कि विश्व स्तर पर भारत का विरोध करने में चीन अलग-थलग पड़ गया क्योंकि, अमेरिका, रूस, ब्रिटेन और फ्रांस ने कहा कि ये भारत का अंदरूनी मसला है। यहां तक कि महत्वपूर्ण मुस्लिम देशों जैसे कि सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात भी भारत को छेड़ने से बचने की कोशिश करते दिखे। यहां हम तुर्की और मलेशिया जैसे अप्रासंगिक देशों की बात नहीं कर रहे हैं।

विश्व स्तर पर किसी देश का प्रभुत्व बढ़ाने के लिए उसके पास उच्च स्तर की जीडीपी होना आवश्यक है। लेकिन, वैश्विक प्रभुत्व के लिए ये पर्याप्त शर्त नहीं है। इस मक़सद को पूरा करने के लिए भारत की विदेश नीति को इसका इस्तेमाल करने के साथ-साथ, भारत की आर्थिक नीति को भी सशक्त करना चाहिए। भारत की विकास दर में आई हालिया गिरावट मे सुधार आने शुरू हो गए है फिर चाहे ये काम मौजूदा सरकार करे या फिर राजनीतिक परिवर्तन के बाद आने वाली नई सरकार।चूंकि, भारत एक लोकतांत्रिक देश है, तो इसके विकास के रास्तों में उतार चढ़ाव भी आएंगे। ये उठा-पटक दूसरे लोकतांत्रिक देशों से कुछ ख़ास अलग नहीं होंगे। ये ठीक वैसे ही होंगे, जैसे हालात इस समय अमेरिका, ब्रिटेन, जापान और जर्मनी जैसे देशों में हैं।

अब जब कि भारत 2020 के दशक में ऐसी आर्थिक परिस्थितियों के साथ प्रवेश कर रहा है, तो ऐसे छह मोर्चे हैं, जिन पर भारत को अगले एक दशक में ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है। भारत के लिए सभी देशों से संबंध महत्वपूर्ण हैं। लेकिन, हमारा ये मानना है कि ये छह सब से अहम मोर्चे ही अगले एक दशक के दौरान हमारे देश की कूटनीति के केंद्र में होंगे। इन भौगोलिक दायरों में भारत को एक साथ कई पेचीदा मसलों पर संवाद करना होगा। मसलन व्यापार और राष्ट्रवाद, तकनीक और उन पर नियंत्रण, ऊर्जा और सुरक्षा। और इनसब से अहम बात ये है कि भारत को दुनिया को कुछ ऐसा देना होगा, जिस से सब का भला हो और साथ ही साथ हमें घरेलू मोर्चे पर भी ग़रीबी को ख़त्म करना होगा।

भारत और अमेरिका के संबंध हमेशा सौहार्दपूर्ण होंगे, ये भी ज़रूरी नहीं है। अमेरिका चाहेगा कि भारत अपने बाज़ार का उदारीकरण करे। भारत, अमेरिका से मांग करेगा कि वो अपने देश में भारतीयों के काम करने के और मौक़े मुहैया कराए।

भारत के कूटनीतिज्ञों के लिए इस दशक की सब से बड़ी चुनौती चीन ही है। भारत की कोशिश है कि जब वो 5G तकनीक को अपने यहां लॉन्च करे तो चीन की हुवावे और ज़ेडटीई (ZTE) जैसी कंपनियों को इस से दूर रखे।ये कंपनियां मीडिया और सुरक्षा के हलकों में अपने लिए ज़बरदस्त लॉबीइंग कर रही हैं। क्योंकि इन सब से आशा है कि ये भारत को सुरक्षित करेंगे। इस दौरान हम देखेंगे कि चीन को लेकर कई तरह की चर्चाएं होंगी।अंत में सुरक्षा की ही जीत होगी. और हुवावे रेस से बाहर होगी। लेकिन, वहां तक पहुंचने के सफ़र के दौरान हमें कई तरह की चुनौतियों का सामना करना होगा।चीन के साथ सीमा का प्रबंधन एक और चुनौती है। बालाकोट के हवाई हमले के बाद चीन का आतंकवादी सहयोगी देश पाकिस्तान, कमोबेश क़ाबू में है।चीन के साथ असंतुलित व्यापार से भारत को घाटा होता है, तो चीन भारी मुनाफ़ा कमा रहा है। भारी फ़ायदे के बावजूद, हमारा पड़ोसी देश चीन गाहे-बगाहे भारत के प्रति ज़बरदस्त नाराज़गी का इज़हार करता रहा है।आने वाले दशक में चीन की कोशिश होगी कि वो भारत के कूटनीतिज्ञों और घरेलू नीति नियंताओं से संवाद के माध्यम से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा निकाल सके। फिलहाल, भारत में ऐसा कोई नहीं है, जो चीन को लेकर सकारात्मक रुख़ रखता हो। लेकिन, अगर चीन, भारत के प्रति अपने नकारात्मक रवैये में सुधार लाता है, तो हम ये उम्मीद कर सकते हैं कि भारतीय विशेषज्ञों की ये सोच इस दशक के आख़िर तक बदल भी सकती है।

रूस और फ्रांस का भारत को समर्थन, एक तरफ़ तो अमेरिका से मुक़ाबले के लिए है। वहीं, दूसरी तरफ़ भारत भी अपनी रक्षा ज़रूरतों को अलग-अलग देशों से पूरी करने पर ज़ोर दे रहा है। इस सामरिक संबंध के दायरे से इतर, भारत के पास रूस और फ्रांस दोनों से संबंधों का दायरा बढ़ाने के काफ़ी अवसर हैं। रूस के साथ भारत ऊर्जा के मोर्चे पर और नज़दीकी बढ़ा सकता है। इस के लिए हम अपने गैस आयात के रूट को नए सिरे से परिभाषित कर सकते हैं। वहीं, फ्रांस के साथ नागरिक एटमी सहयोग के फ्रेमवर्क एग्रीमेंट के बाद, इस दशक में हम दोनों देशों के बीच और एटमी पावर प्लांट लगाने के समझौते होते देख सकते हैं।

भारत, अपने तीन पड़ोसियों-भूटान, म्यांमार और मालदीव के साथ संबंधों को सही रास्ते पर ले आया है। ऐसे में आने वाले दशक में भारत को आगे बढ़ कर नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका के साथ अपने संबंध सुधारने पर ध्यान देना चाहिए। चूंकि भारत एक बड़ी अर्थव्यवस्था है और ज़्यादा प्रभावशाली देश है, तो भारत को चाहिए कि वो इन देशों के साथ संबंधों पर नए सिरे से विचार करे और इन देशों से हुए हालिया विवाद को ख़त्म करने की कोशिश करे। हमने बेवजह ही चीन को इन देशों के साथ अपने विवाद का फ़ायदा उठाने का मौक़ा दिया है। थोड़ी सी कूटनीतिक विनम्रता से हम इन देशों के साथ पहले जैसे बेहतर संबंध फिर से बना सकते हैं। क्योंकि, इनमें से किसी भी देश के लिए चीन या भारत में से एक को चुनने वाली मजबूरी नहीं है। दोनों साथ-साथ इन देशों से अच्छे संबंध रख सकते हैं। लेकिन, अगर चीन के पास ज़्यादा सामरिक और आर्थिक शक्ति है, तो भारत भी कोई कमज़ोर खिलाड़ी नहीं है। इस के अलावा, अगर भारत के पास चीन से कम शक्ति है, तो इस की भरपायी हम अपनी तकनीकी क्षमता से कर सकते हैं। आधार या फिर ऑनलाइन भुगतान के प्लेटफ़ॉर्म जैसे यूपीआई (Unified Payments Interface) ऐसे उत्पाद हैं जिन्हें हम न केवल अपने पड़ोसियों को तोहफ़े में दे सकते हैं, बल्कि दुनिया के अन्य देशों को भी इन्हें मुहैया करा सकते हैं। ख़ास तौर से अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका के देशों को। यहां तक कि इस मामले में अमेरिका और ब्रिटेन को भी भारत के सहयोग से फ़ायदा ही होगा।

जापान और जर्मनी, दुनिया की तीसरी और चौथी बड़ी अर्थव्यवस्थाएं हैं। हमें इन देशों के साथ अपने संबंधों का दायरा और बढ़ाने की ज़रूरत है।जापान के साथ हमारे संबंध आर्थिक भी हैं और सामरिक भी। चार देशों के बीच होने वाले सुरक्षा संवाद (Quadrilateral Security Dialogue) के ज़रिए जापान से हमारे रणनीतिक संबंध हैं तो, निवेश और व्यापार के ज़रिए हमारे और जापान के आर्थिक संबंध भी हैं।भारत और जापान के रिश्ते दोस्ताना हैं। मगर, दोनों ही देश इस संबंध को और बेहतर बनाने की गुंजाईश रखते हैं। क्योंकि दोनों ही देशो को चीन से मुक़ाबला करना है। भारत और जर्मनी के संबंध ज़्यादा साधारण हैं। दोनों ही देशों के बीच कारोबार, निवेश और तकनीकी आदान-प्रदान जैसे रोबोटिक्स के क्षेत्र में सहयोग होता है, न कि सुरक्षा के मोर्चे पर। अब जबकि घरेलू मोर्चे पर बढ़ती लागत की मुश्किलें होने की वजह से जर्मनी की कंपनियां निवेश के नए ठिकाने तलाश रही हैं, तो भारत को चाहिए कि वो जर्मनी की कंपनियों के अपने यहां काम करने की राह बनाए ताकि भारत में मैन्यूफैक्चरिंग के क्षेत्र को बढ़ावा दिया जा सके। भारत को अपने क़ानूनों में ऐसे बदलाव करने की ज़रूरत है।

भारत को 10 ख़रब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के लिए पहले से कहीं ज़्यादा ऊर्जा की ज़रूरत होगी।भारत पहले ही दुनिया का तीसरा बड़ा तेल आयातक देश है। आने वाले वक़्त में भारत की ऊर्जा ज़रूरतें बढ़नी तय ही हैं।भौगोलिक रूप से क़रीब होने की वजह से हम अपनी ऊर्जा ज़रूरतों के लिए सब से ज़्यादा पश्चिमी एशिया पर ही निर्भर रहते हैं। वहीं, दूसरी तरफ़ पश्चिमी एशियाई देशों में भारत के काफ़ी लोग काम भी करते हे हैं। खाड़ी देशों से हमारे संबंधों को इसलिए और मज़बूत बनाने की ज़रूरत है।

भारत और भूटान के बीच हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट, नॉलेज नेटवर्क, मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल, स्पेस सेटेलाइट और रूपे कार्ड के इस्तेमाल समेत 10 समझौते पर हस्ताक्षर हुए। भारत और भूटान के बीच यह निर्णय हुआ है कि इसरो भूटान में एक ग्राउंड स्टेशन लगाएगा। भारत ने इससे पहले भी भूटान को व्यक्तिगत स्तर पर सार्क सेटेलाइट का लाभ देने का प्रस्ताव किया था। मोदी ने भारतीय रूपे कार्ड को भी भूटान में लॉन्च किया। इससे पहले रूपे कार्ड सिंगापुर में ही लॉन्च किया गया था। दक्षेस मुद्रा स्वैप प्रारूप के तहत भूटान के लिए मुद्रा स्वैप सीमा बढ़ाने पर मोदी ने कहा कि भारत का रुख सकारात्मक है। विदेशी विनिमय की जरूरत को पूरा करने के लिए वैकल्पिक स्वैप व्यवस्था के तहत भूटान को अतिरिक्त 10 करोड़ डॉलर उपलब्ध कराए जाएंगे।

भूटान के प्रधानमंत्री ने असम में आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर समिट में भाग लिया और परोक्ष रूप से भारत के एक्ट ईस्ट पॉलिसी और लुक ईस्ट पॉलिसी में एक सहायक की भूमिका निभाते हुए गुवाहाटी में अपना कांस्युलेट ऑफिस

खोलने की घोषणा की। भूटान ने भी अपनी पैराडिप्लोमेसी कुशलता का परिचय देते हुए राज्य सरकार में एक्ट ईस्ट डिपार्टमेंट गठित करने की घोषणा की। इस तरह असम भारत का पहला राज्य बना है जिसने एक्ट ईस्ट डिपार्टमेंट का गठन किया है। यहां यह जानना जरूरी है कि आज उत्तर पूर्वी भारतीय राज्यों को चीन के कुत्सित मंसूबों से बचाने के लिए भारत कुछ देशों को लामबंद करने की रणनीति पर चल रहा है। भूटान इस रणनीति की अहम कड़ी बन रहा है। इसके साथ ही भारत ने जापान के साथ एक्ट ईस्ट फोरम का गठन किया है । इस फोरम के जरिये जापान भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में अवसंरचनात्मक विकास के लिए परियोजनाएं चलाएगा और उन्हें वित्त पोषित भी करेगा। इस प्रकार भूटान, जापान, लुक ईस्ट पॉलिसी के तहत आसियान के देशों को उत्तर पूर्वी भारतीय राज्यों के विकास के काम में लगाने की रणनीति पर भारत काम कर रहा है।

असम ने कहा है कि वह भूटान के तर्ज पर अपने सकल घरेलू उत्पाद में राज्य के नागरिकों की प्रसन्नता की गणना करने पर भी विचार कर रहा है। भूटान के साथ ही जिन देशों को उत्तर पूर्वी भारतीय राज्यों से जोड़ने का काम भारत ने किया है, वह भारत की धार्मिक और आध्यात्मिक डिप्लोमेसी का प्रमाण है। ये सभी देश बौद्ध धर्म को मानने वाले हैं, ये साझी सांस्कृतिक विरासत के भी उत्तराधिकारी हैं। तिब्बत के धर्मगुरु दलाई लामा को भारत ने पहले ही राजनीतिक शरण दे रखा है। बांग्लादेश को भी सिलीगुड़ी गलियारे के जरिये उत्तर पूर्वी भारत से आबद्ध करने की कोशिश हाल में की गई है। त्रिपुरा में सबरूम नामक जगह पर फेनी नदी पर बांध निर्माण और उत्तर पूर्वी भारत को चटगांव पोर्ट से जोड़ने की योजना भी बनाई गई है। इसी कड़ी में भारत बांग्लादेश के बीच अखोरा अगरतला रेल लिंक भी बनाना शुरू कर दिया गया है।

भारत भूटान संबंधों का सबसे मजबूत आधार पनबिजली सहयोग रहा है। भारत के वित्तीय मदद से भूटान की शुरुआती तीन पनबिजली परियोजनाएं कुरीछू (60 मेगावाट), चूखा (336 मेगावाट), ताला (170 मेगावाट) आज कार्यशील हैं और इनसे उत्पादित पनबिजली भारत खरीदता है। 2009 में दोनों देशों ने एक प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किया जिसमें यह सहमति बनी कि भारत 2020 तक भूटान को 10 हजार मेगावाट बिजली का उत्पादन कराने में सहयोग कर उससे अधिशेष बिजली खरीदेगा। इसके बाद भारत ने भूटान के पुनातसंगछू (1,200 मेगावाट), वांगछु (570 मेगावाट) खोलांगचू परियोजना और हाल में मांगड़ेचू (720 मेगावाट) पनबिजली परियोजनाओं में मदद की है।

भारतीय प्रधानमंत्री और भूटानी प्रधानमंत्री ने मिलकर मांगदेचू पनबिजली परियोजना का उद्घाटन किया। हाइड्रोपावर संबंधों को मजबूती देने में इसे महत्वाकांक्षी परियोजना माना गया है। इस परियोजना से भूटान की ऊर्जा जरूरतें पूरी होंगी और सरप्लस ऊर्जा भारत को निर्यात कर दी जाएगी। भारत भूटान का सबसे बड़ा ट्रेड और डेवलपमेंट पार्टनर है। दोनों देशों के बीच लगभग 9,000 करोड़ रुपये का द्विपक्षीय व्यापार है। भूटान अपने कुल आयात का 80 प्रतिशत से अधिक भारत से करता है और भूटान के कुल निर्यात का 85 प्रतिशत से अधिक भारत को किया जाता है। भूटान की तीन चौथाई बिजली भारत को निर्यात की जाती है।

संक्षेप में कहें तो भारत की विदेश नीति में वर्तमान में आमूलचूल परिवर्तन देखने को मिलता है यह बात इसी तथ्य से सिद्ध हो जाती है की भारत ने हाल ही में
दृढ़ता के साथ जम्मू कश्मीर में धारा 370 को खत्म किया।

संदर्भ:

1. भारत की विदेश नीति - बी0 एन0 खन्ना, लीपाक्षी अरोड़ा, लेसली कुमार
2. भारत की विदेश नीति - हरीश कुमार खत्री
3. भारतीय विदेश नीति -जे0 एन0 दीक्षित
4. स्वंतत्र भारत की विदेश नीति- वी0 पी0 दत्त

5. विकिपीडिया
6. इडिया ऑफटर गाँधी- रामचन्द्र गुहा